IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुगलकालीन हिन्दुओं की स्थिति का अध्ययन

मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय
सीकर –332001

सारांश :– मुगलकालीन हिन्दुओं पर भयानक अत्याचारों के कारण हिन्दुओं में बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, कन्यावध और जोहर जैसी कुप्रथाऐं पनप गई थीं। हिन्दु–नारियों को दासी के रूप में बेचा जाता था। हिन्दुओं के लिए सरकारी तथा गैर–सरकारी दोनों प्रकार के पदों के द्वार बन्द थे। उन्हें 'जजिया' कर देना पड़ता था। अलाउद्दीन के समय में उन्हें चरागाहों और मकानों का भी कर देना पड़ता था। कहीं–कहीं हिन्दुओं को 50% कर देना पडता था जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। इसके विपरीत मेंहदी हुसैन तथा आई० एच० कुरेशी की ऐसी मान्यता है कि है कि मुस्लिम काल में हिन्दुओं ही दशा पहले की तुलना में अच्छी थी।

मुसलमानों ने हिन्दूओं पर भयानक अत्याचार किए। असंख्य हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया। उनकी स्त्रियों की बेज्जती की गई। बहुतों को गुलाम बना लिया गया। तुर्क सरदार और शासक हिन्दुओं की सुन्दर लड़कियों को अपनी पत्नी बना लेने थे। ऐसे अत्याचारों के कारण हिन्दुओं में बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा, कन्यावध और जोहर जैसी कुप्रथाऐं पनप गई थीं। ये सब उस समय की हिन्दुओं की विवशता का परिणाम थी। इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा है कि अकबर से यह पूछे जाने पर कि ''मुस्लिम राज्य में हिन्दुओं की क्या स्थिति होनी चाहिए'' काजी ने कहा था कि वे खिराजगुजार कहलाते हैं और जब तहसीलदार उनसे चाँदी माँगता है, तब वे बिना किसी हिचकिचाहट किए और बड़ी नम्रता तथा आदर के साथ सोना भेंट करते हैं। यदि कर वसूल करने वाला अधिकारी उनके मुख में धूल झौंकना चाहता है तो उसे बिना हिचकिचाहट के अपना मुख खोल देना चाहिए।

तैमूर ने एक लाख हिन्दुओं को कत्ल करवा दिया था। हिन्दु–नारियों को दासी के रूप में बेचा जाता था। इतिहासकार बर्नी ने लिखा है कि हिन्दुओं की हालत यहाँ तक गिर गई थी कि खुत भैर मुकद्दमों की पत्नियों को मुसलमानों के घर काम करने के लिए विवश होना पड़ता था। डॉ० आशीर्वादीलाल ने भी हिन्दुओं की दयनीय दशा के बारे में लिखा है ''हमारे देश के इतिहास के किसी भी युग में प्रारम्भिक अथवा परवर्ती ब्रिटिश युग में मी नहीं – मानव–जीवन का नृशंसतापूर्ण नाश नहीं किया गया जितना तुर्क–अफगान के इन 250 वर्षों में। हिन्दुओं के लिए सरकारी तथा गैर–सरकारी दोनों प्रकार के पदों के द्वार बन्द थे। उन्हें 'जजिया' कर देना पड़ता था। अलाउद्दीन के समय में तो हिन्दुओं के साथ और भी कठोर व्यवहार किया जाता था। उन्हें

चरागाहों और मकानों का भी कर देना पड़ता था। कहीं–कहीं हिन्दुओं को 50% कर देना पडता था जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी।

इसके विपरीत कुछ विद्वानों की ऐसी मान्यता है कि मुस्लिम काल में हिन्दुओं की स्थिति अच्छी थी। वे सुखी और सन्तुष्ट थे। शासन की ओर से उनसे साथ कोई बुरा आचरण नहीं किया जाता था। इस मत के समर्थकों में मेंहदी हुसैन तथा आई० एच० कुरेशी हैं। इन्होंने बताया है कि मुस्लिम काल में हिन्दुओं ही दशा पहले की तुलना में अच्छी थी। उन पर अधिक बोझ मुस्लिम काल से पहले से था।